शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'गोदान' उपन्यास में कृषक जीवन की करुण गाथा

सरिता (शोधार्थी)
हिन्दी
हेमवतीनंदन बहुगुणा गढ़वाल (केंद्रीय) विश्वविद्यालय
श्रीनगर, पौढ़ी परिसर
उत्तराखंड, भारत

शोध संक्षेप

कालजयी साहित्य को समय की कसौटी पर कसा जाता है। इस प्रकार के साहित्य में अभिव्यक्त मानवीय मूल्य उसे साहित्य की अमूल्य निधि बना देते हैं। ऐसा साहित्य सभी समय अपनी प्रासंगिकता बनाये रखता है। वह समय के प्रभाव से अछूता रहता है। मुंशी प्रेमचंद के साहित्य में यह गुण बहुत गहराई तक धंसा है, इससे उनका साहित्य सदैव नवीन बना रहता है। वे शुद्ध रूप से मानवीय मूल्यों के रक्षक थे। अभाव, उत्पीड़न, शोषण, अन्याय, अत्याचार और गरीबी के ज्वलन्त घावो का व्यापक और सफल चित्रण करने वाले कथाकार माने जाते हैं। "जिस साहित्यकार की आत्मा जितना अधिक आत्मक्रंदन करती है, जर्जर जीवन की भट्टी में जितना अधिक जलती है। युग-आघातों को जितना अधिक सहती है और जीवन की चक्की में पिसती हुई जितनी ही अधिक मर्म-व्यवस्था की निजी अनुभूतियाँ प्राप्त करती है, उतनी ही अधिक सचाई से वह साहित्यकार दुःखी मानवता का हाहाकार अपनी रचनाओं में प्रस्तुत कर सकता है।"1 प्रस्तुत कथन के परिप्रेक्ष्य में शोध पत्र में मुंशी प्रेमचंद के गोदान उपन्यास में कृषक जीवन की करुण कथा का अवलोकन किया गया है।

प्रेमचंद की साहित्यिक पृष्ठभूमि

प्रेमचन्द के साहित्य लेखन में हमें यह रूप देखने को मिलता है। हम मान सकते हैं कि 'गोदान' जैसे उपन्यास की रचना करने वाले कथाकार के मनोविकास को समझने के लिए हमें उनके जीवन की स्थिति का अवलोकन करना आवश्यक है।

प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई 1880 में बनारस के पास स्थित लमही गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम अजायबराय पोस्ट आफिस में नौकर थे। प्रेमचन्द के बचपन का नाम धनपतराय था। उनकी पारिवारिक स्थितियाँ प्रारम्भ से अन्त तक विषमतापूर्ण रहीं। जब प्रेमचंद 8 वर्ष के थे तो उनकी माता की मृत्यु हो गयी। प्रेमचन्द का विवाह 15 साल की उम्र में अपने से बड़ी उम्र की लड़की के साथ हुआ था। इसी कारण उनके उपन्यासों में अनमेल विवाह भी देखने को मिलता है।

प्रेमचन्द ने अपनी पत्नी के बारे में लिखा है- "उमर में वह मुझसे ज्यादा थी। जब मैंने उनकी सूरत देखी, तो मेरा खून सूख गया। वह बदसूरत तो थी ही उसके साथ-साथ जबान की भी मीठी न थी। मेरे पिता को मालूम हुआ कि मेरी बीबी बहुत बदसूरत है। बेहयाई की हरकत उन्होंने बाहर ही देख ली थी। पिताजी चाची से बोले लालाजी ने मेरे लड़के को कुएँ में ढकेल दिया अफसोस। मेरा गुलाब-सा लड़का और उसकी यह स्त्री!"2

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

गोदान उपन्यास में कृषक जीवन

'गोदान' उपन्यास कृषक जीवन का महाकाव्य माना जाता है। इस उपन्यास के माध्यम से प्रेमचन्द ने भारतीय ग्राम्य जीवन की आत्मा को सशक्त अभिव्यक्ति दी है। इसी कारण डॉ. गंगाप्रसाद 'विमल' ने इसे भारतीय ग्रामीण जीवन की समस्याओं का 'महाकाव्य' और 'गीता' की उपाधि दी है। इस उपन्यास के प्रमुख नायक होरी के माध्यम से ग्रामीण-जीवन की करुण गाथा का वर्णन किया गया है।

'गोदान' में लखनऊ के समीप बेलारी गाँव के कृषक जीवन की गाथा का चित्रण किया है। होरी के पास पांच बीघा भूमि थी किन्तु रायसाहब अमरपाल सिंह की कृपा दृष्टि से गाँव में उनका काफी मान-सम्मान था और वह महतो कहलाता था। होरी का जमींदार के यहाँ आना-जाना था। होरी की पत्नी धनिया कुछ तीखे स्वभाव की थी, किन्तु साथ ही वह सहनशील एवं भावनामयी थी। होरी की तीन सन्ताने थी गोबर पुत्र था और सोना व रूपा दो पुत्रियाँ थी।

होरी पुराने विचारों और संस्कृति को मानने वाला था। जिस कारण उसके मन में गाय लाने का विचार रहता है, लेकिन होरी के पास पैसे नहीं रहते हैं। तब होरी भोला को भूसा ले जाने को कहता है और बदले में भोला उसे गाय देता है। होरी के घर में गाय आने पर परिवार के सदस्यों की खुशी देखते ही बनती है। प्रेमचंद लिखते हैं, "होरी का परिवार फूला नहीं समा रहा है, विशेषकर होरी, क्योंकि उसकी तो आज चिर-संचित अभिलाषा पूर्ण हुई है। गाय बहुत सुन्दर और अच्छी थी, यह समाचार सारे गाँव में आग की भांति फैल गया।"3

कृषक जीवन की करुण गाथा जो प्राचीन समय से समाज में व्याप है। "धनिया ने होरी की देह छुई, तो उसका कलेजा सन से हो गया। मुख कांतिहीन हो गया था काँपती हुई आवाज से बोली..... कैसा जी है तुम्हारा? होरी ने स्थिर आँखों से देखा और बोला..... तुम आ गये गोबर? मैंने मंगल के लिये गाय ले ली है वहाँ खड़ी है, देखो। धनिया ने मौत की सूरत देखी थी, उसे पहचानती थी।"4

"उसकी अज्ञानता, मूर्खता और रूढ़िवादिता से हमारे मन में खीज ही उत्पन्न होती है हम उसके कार्यों, उसके दबते रहने, लुटते रहने और यहाँ तक कि उसके इस प्रकार परिश्रम करने से सहमत नहीं होते। मन में यही आता है कि वह क्यों इस प्रकार अपना शरीर गला रहा है, क्यों शोषण की चक्की में पिस रहा है? उसे नहीं करना चाहिए यह सब-कुछ, नहीं सहना चाहिए शोषण और अन्याय।"5

इस उपन्यास में करुण रस एवं वीभत्स रस के माध्यम से कृषक जीवन की दीन दशा तथा उच्चवर्गीय समाज की वीभत्सतापूर्ण उच्च दशा वैषम्य का स्वरूप दिखाया गया है। "महाराज! संसार में गऊ बनने से काम नहीं चलता जितना दबो, उतना ही लोग दबाते हैं। थाना-पुलिस, कचहरी-अदालत सब हैं हमारी रक्षा के लिए! लेकिन रक्षा कोई नहीं करता है। चारों तरफ लूट है। जो गरीब है, बेबस है उसकी गरदन काटने के लिए सभी तैयार रहते हैं। भगवान न करे, कोई बेईमानी करे यह बड़ा पाप है। लेकिन अपने हक और न्याय के लिए न लड़ना उससे भी बड़ा पाप है।"6

"तुम्हीं सोचो, आदमी कहाँ तक दबे ? यहाँ तो जो किसान है, वह सबका नरम चारा है। पटवारी को नजराना और दस्तूरी न दे तो गाँव में रहना मुश्किल। जमींदार के चपरासी और कारिन्दों का पेट न भरे तो निबाह न हो। थानेदार और

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कानिसिटिबिल तो जैसे दामाद हैं, कभी कानोगो आते हैं, कभी तहसीलदार, कभी डिप्टी उनके लिए रसद-चारे, अण्डे-मुर्गी, दूध-घी का इन्तजाम करना चाहिए। एक न एक हकिम रोज नये बढ़ते जाते हैं। अभी जमींदार ने गाँव पर हल पीछे दो-दो रूपये चन्दा लगाया।"7

होरी कृषक की व्यथा बताता है कि अनाज तो सब का खेतों से ही जमींदार, महाजन, अपना कहकर ले जाता है। किसान के लिए पाँच सेर तक का अनाज नहीं बचता है। "भूसा तो मैंने रातोरात ढोकर छिपा दिया था, नहीं तिनका भी न बचता जमींदार तो एक ही है, मगर महाजन तीन-तीन हैं, सहुआइन अलग, माँगरू अलग और दाताहीन पण्डित अलग। किसी का ब्याज भी पूरा न चुका। जमींदार के भी आधे रूपये बाकी पड़ गये।"8 इस वक्तव्य में किसान के मन की करुण गाथा की अभिव्यक्ति की गई है, जो प्राचीन समय से जमीदारों द्वारा भूमि पर लगाया गया कर (लगान) किसान को देना ही पड़ता है चाहे उसके लिए कुछ भी शेष न बचे।

भोला और होरी आपस में वार्ता करते हैं तो भोला कहता है बड़े आदिमियों की बात क्यों करते भाई, तब होरी कहता है हम भी तो इन्सान हैं तब भोला कहता है- "हम तुम आदमी हैं, हम मैं आदमियत कहाँ ? आदमी वह हैं, जिनके पास धन है, अख्यितयार है, इलम है, हम लोग तो बैल हैं और जुतने के लिए पैदा हुए हैं। उस पर एक दूसरे को देख नहीं सकता। एक का नाम नहीं एक किसान दूसरे के खेत पर न चढ़े तो कोई जाफा कैसे कर, प्रेम तो संसार से उठ गया है।"9 किसान का जीवन उन दो बैलों के समान है जो हमेशा दूसरों की इच्छा अनुसार काम करते हैं।

कृषक जीवन में आने वाली कठिनाई का प्रेमचंद ने शुरू से अन्त तक मार्मिक चित्रण किया है। किसान की गरदन दूसरों के पाँवों तले दबी हुई है और वह उन पावों को सहलाने में ही अपनी कुशल समझता है। होरी कहता है- इसी काम को करने की वजह से हमारी जान बचती है, नहीं तो कहीं पता न लगता कि हम कहाँ चले गये।

होरी की पत्नी धनिया अपने विवाह के बाद कृषक जीवन के अनुभव के बारे में कहती है- "चाहे कितनी ही क़तर ब्योंत करो कितना ही पेट-तन काटो, चाहे एक-एक कौड़ी लो, दाँत से पकड़ो, मगर लगान से मुक्त हो मुश्किल है।"10 धनिया अपने मन की व्यथा उजागर करती है अगर हमारे पास धन होता तो मेरी तीन संताने नहीं मरती।

महाजनी के कर वसूली करने पर होरी के मन की व्यथा- "लेकिन ठाकुर ने ऊँच-नीच सुझाया महाजनी के हथकण्डों का ऐसा भीषण रूप दिखाया कि उसके मन में भी यह बात बैठ गई। ठाकुर ठीक ही तो कहते हैं जब हाथ में रूपए आ जाय गाय ले लेना। तीस रूपए का कागद लिखने पर कहीं पचास रूपए मिलेंगे और तीन-चार साल तक न दिये गए, तो पूरे सौ हो जाएंगे। पहले का अनुभव यह बता रहा था कि कर्ज वह मेहमान है, जो एक बार आकर जाने का नाम नहीं लेता।"11

भारत कृषि प्रधान देश है जिस कारण यहाँ के लोग खेती को अपनी सन्तान मानकर उसका सही तरिके से पालन-पोषण करते हैं। प्राचीन समय में जिसके पास जितने खेत होते थे वह उतना ही धनी माना जाता था। इसी धनी वर्ग ने किसान को कठिन जीवन जीने पर मजबूर करता है। यही स्थिति होरी की भी है वह अपनी मर्यादा बचाने के लिए अपना जीवन नष्ट कर देता है। "होरी कहता है- हमी को खेती से क्या मिलता है ? जो दस रूपये महीने का भी नौकर है वह भी हमसे अच्छा खाता पहनता है। लेकिन खेतों को

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

तो छोड़ा नहीं जाता मरजाद भी तो पालना ही पड़ता है खेती में जो मरजाद है, वह नौकरी में तो नहीं है।"12

कृषक जीवन में धर्म और ब्राह्मण का महत्व बताया गया है, जो किसानों के शोषण का कारण बनता है। भोला धर्म की दुहाई देकर होरी के दोनों बैल ले जाता है। पण्डित दातादीन ब्राह्मणत्व के नाम पर होरी को बेगार बनाता है और होरी के शब्दों में- "अगर ठाकुर या बनिये के रूपये होते, तो उसे ज्यादा चिन्ता होती, लेकिन ब्राह्मण के रूपये, उसकी एक पाई भी दब गयी, तो हड्डी तोड़कर निकलेगी।"13

होरी के कृषक जीवन की व्यथा में वह ऋण लेकर हमेशा अपनी मरजाद बचाने में लगा रहता है। होरी अपने खेतो को बचाने के लिए बेटी रूपा को बेचने के लिए विवश हो जाता है, जिस कारण वह अन्दर ही अन्दर खोखला होता जाता है। इसी मर्यादा के कारण उसकी स्थिति बहुत ही दयनीय हो जाती है। जब दरोगा होरी के भाई हीरा के घर की तलाशी लेने को कहता है तो इस भय से होरी की स्थिति- "होरी के मुख का रंग ऐसा उड़ गया जैसे देह का रक्त सूख गया हो। तलाशी उसके घर हुई तो या उसके भाई के घर हुई तो, एक ही बात है।"14

गोदान उपन्यास का आरम्भ और अन्त दुःखान्त ही है। इस उपन्यास में भारतीय समाज के कृषक जीवन की पीड़ा का चित्रण होरी के माध्यम से किया गया है। होरी अपनी मर्यादा को बचाते-बचाते अपने जीवन को ही नष्ट कर देता है, परन्तु अपने घर में गाय नहीं ला पाता है। होरी के जीवन के अन्तिम क्षणों का दृश्य इस प्रकार का है जो होरी द्वारा अपनी पत्नी धनिया को कहा गया है- "मेरा कहा सुना माफ करना धनिया! अब जाता हूँ। गाय की लालसा मन में ही रह गई अब तो यहाँ के रूपए क्रिया-करम में जायेंगे। रो मत धनिया, अब कब तक चिलाएगी ? सब दुर्दशा तो गई। अब मरने दे।"15

होरी के जीवन की करुण गाथा मन को मुग्ध कर देती है। होरी की गाय के मरने, पंचो और बिरादरी द्वारा लगाये गये कर को भरने में सारी फसल खेत में ही बंट जाती है। गन्ने की बिक्री के रूपयों में से एक भी पैसे उसको नहीं बचते है, अनाज के दाने-दाने के लिए तरसता, उसकी छोटी बेटी रूपा भूख से बिलखती है। इन सभी दृश्यों और उसका शक्ति से बाहर काम करना, सर्दी में ठिठुरना, भोला द्वारा बैलों का भी ले जाना, निर्दयी दातादीन की मजदूरी करना, घर में न फूटी कौड़ी है। इन सभी बातों से होरी के कृषक जीवन की करुण कथा का पता चलता है।

'गोदान' उपन्यास कृषक जीवन की करुण गाथा पर आधारित है। उसका आरम्भ भी करुण गाथा से शुरु होता है और अन्त भी मनुष्य की करुण गाथा (दुःखमयी) जीवन से होता है। इस उपन्यास का नायक होरी और उसकी पत्नी धनिया अपनी मर्यादा बचाने के लिए परिश्रम करते हैं। अपने परिवार के पालन पोषण के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। परिश्रम ही उनके जीवन का लक्ष्य बन जाता है। वह पिटता है, लुटता है, गिरता है, लेकिन फिर भी धूल साफ करके खड़ा होता है और अपने काम के प्रति सदैव तत्पर रहता है। परिश्रम अपनी ताकत से भी ज्यादा करता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं मुंशी प्रेमचन्द ने 'गोदान' उपन्यास के माध्यम से भारतीय ग्रामीण जन-जीवन का चित्रण किया है। भारतीय ग्राम्य समाज में कृषि को प्रधानता दी जाती थी जो होरी के माध्यम से दर्शाया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.डॉ. कृष्णदेव भक्तरी, प्रेमचन्द की उपन्यास-कला का उत्कर्ष, पृष्ठ 9

2.वही, पृष्ठ 11

3.माया अग्रवाल, 'गोदान' एक विवेचन, पृष्ठ 10

4.प्रेमचन्द, 'गोदान', पृष्ठ 309-310

5.माया अग्रवाल, 'गोदान' एक विवेचन, पृष्ठ 105-106

6.डॉ. कृष्णदेव भक्तरी, प्रेमचन्द की उपन्यास कला का उत्कर्ष, पृष्ठ 106

7.वही

8.मुंशी प्रेमचंद, 'गोदान', पृष्ठ 30

9.वही, पृष्ठ 31

10.डॉ. कृष्णदेव भक्तरी, प्रेमचन्द की उपन्यास-कला का उत्कर्ष, पृष्ठ 107

11.मुंशी प्रेमचंद, 'गोदान', पृष्ठ 88

12.माया अग्रवाल, 'गोदान' एक विवेचन, पृष्ठ 155

13.वही, पृष्ठ 157

14.माया अग्रवाल, 'गोदान', एक विवेचन, पृष्ठ 56

15.प्रेमचन्द, 'गोदान', पृष्ठ 310